International Journal of Advance and Applied Research
www.ijaar.co.in
ISSN – 2347-7075 Impact Factor – 7.328
Peer Reviewed Bi-Monthly
Vol.11 No.2 Nov-Dec 2023

प्रवासी हिन्दी साहित्यकार तेजेन्द्र शर्मा और उनकी कहानियाँ

डॉ. संतोष वसंत कोळेकर
कोल्हापुर
Corresponding Author – डॉ. संतोष वसंत कोळेकर
DOI- 10.5281/zenodo.14228255

सारांश:

तेजेन्द्र शर्मा प्रवासी हिन्दी साहित्य के एक महत्त्वपूर्ण कथाकार एवं कवि है। वर्तमान में ब्रिटेन में रहकर साहित्य सृजन कर रहे हैं। हिन्दी, उर्दू, अंग्रेजी, पंजाबी इन सभी भाषाओं में समान अधिकार रखने वाले कवि तेजेन्द्र शर्मा की कहानियों में और कुछ कविताओं में प्रेम सौन्दर्य प्रकृति के विविध रूपों के दर्शन होते हैं। इनकी कहानियां सरल भाषा एवं सहज शब्दों द्वारा रची गयी है।

विश्वविख्यात प्रवासी साहित्यकार तेजेन्द्र शर्मा की अनेक कहानी संग्रह प्रकाशित हुए हैं। तथा इनके द्वारा ही अनेक कृतियों का संपादन भी किया गया है।

भारत के अलावा विदेशों में भी इन्हें सम्मानित किया गया है। ब्रिटेन की महारानी एलिजाबेथ द्वितीय ने तेजेन्द्र शर्मा को मेम्बर ऑफ द ऑर्डर ऑफ द ब्रिटिश एम्पायर सम्मान प्रदान किया। वर्तमान में ये लंदन से प्रकाशित होने वाली पत्रिका 'पुरवाई' का संपादन भी करते हैं।

प्रस्तावना:

तेजेन्द्र शर्मा वर्तमान समय के एक-एक अकेले ऐसे प्रवासी लेखक हैं जिन्होंने अपनी बात को बड़ी स्पष्टता से कहने का साहस है। सत्य और साहस के साथ बात रखने की कला उनके व्यक्तित्व को और मजबूती प्रदान करती है।
आपकी कविताओं में प्रेम, श्रृंगार, प्रकृति प्रेम, मानवीय संवेदना एवं कविता में आत्मानुभूति की अभिव्यक्ति है। इनकी कहानियां मानवीय मूल्यों में प्रेम को स्पर्श करती हुई है।

तेजेन्द्र शर्मा की कहानियों में एक और भारतीय संस्कृति, देशकाल, रीति-रिवाज, प्रथा, परम्परा आदि मौजूद हैं तो वहीं उनके अपनाए हुए देश ब्रिटेन के सामाजिक सरोकार भी उनकी कहानियों को महत्त्वपूर्ण बनाते हैं। उनकी सभी कहिनयां संवेदनाशील व्यक्तित्व का प्रमाण देती हैं।

तेजेन्द्र शर्मा ने कहानियों के माध्यम से पारिवारिक बिखराव, भौतिकवादी दृष्टिकोण, अर्थ से संचालित रिश्ते, बाजारवाद आदि विभिन्न पहलुओं को उजागर किया है। इन्होंने अपनी कहानियों में बेरोजगारी जैसे ज्वलंत एवं महत्त्वपूर्ण मुद्दों का समावेश भी किया है।

तेजेन्द्र शर्मा ने साहित्य की विभिन्न विधाओं में अपनी लेखनी चलाई। कहानी उनकी प्रिय विधा है। इनकी कहानियों में कल्पना और यथार्थ का खूबसूरत समन्वय दिखाई देता है। यथार्थ एवं समाजिकता को केन्द्र बनाकर उन्होंने अपनी कहानियों को गढ़ा है।

आज के समय में इस आधुनिक जीवन के नये पक्ष और नये संदर्भ इनकी कहानियों में देखने को मिलते हैं। जीवन के समस्त सत्यता का सामना करते इनके पात्र अनुभवों के संसार से पैदा हुए हैं। इसी कारण पात्र निर्माण में इन्होंने जो एक असाधारण शक्ति दिखाई वह इनकी एक विशेषता है।

तेजेन्द्र शर्मा ने अपने लेखन को कभी धर्म, जाति और देश सीमा में नहीं बंधने दिया। इनका लेखन आज एक वैश्विक पहचान बना चुका है। इंग्लैंड की धरती से जुड़े होकर भी वे भारतीय धरती का दर्द आज भी वह महसूस करते हैं। उनके कलम कुछ ऐसा जादू है कि पाठक खोज-खोजकर उनके लेखन को पढ़ना चाहते हैं।

तेजेन्द्र शर्मा की अनेक कहानियों में मानव जीवन के अनेक अनुभव और विविध रूप देखने को मिलते हैं। मौत जैसा शाश्वत सत्य कई रूपों में दिखाई देता है। पढ़ते वक्त पाठक को एक खास वेदना का अनुभव होता है तथा वह उसमें उसी तरह रम जाता है। पाठक कहानी के साथ अपने आपको जुड़ा हुआ महसूस करता है। मृत्यु को बहुत करीब से देखा हुआ एक अलग तरह का अनुभव महसूस करता है।

प्रवासी कथा साहित्य में तेजेन्द्र शर्मा का नाम बहुत गौरव के साथ लिया जाता है। उनकी विभिन्न कहानियां, रचनाएं एवं लेख आदि में प्रेम की परिभाषा ही अलग-अलग स्वरूपों में दिखाई देती है। तथा भाषा और शब्दों का बहुत ही मौलिक ढंग से प्रयोग किया है जोकि पाठकों को पढ़ते वक्त दिल में ही उतर जाती है। और उन्हें बार-बार पढ़ने को मजबूर करती है।

तेजेन्द्र की सभी कविताओं में, कहानियों में प्रेम की अनुभूति बहुत ही अलग-अलग तरीकों से देखने को मिलती है। चाहे वह प्रकृति प्रेम हो या देश प्रेम, या फिर मानवीय प्रेम हो। इन सभी को बहुत ही सुंदर ढंग से कथाकार तेजेन्द्र जी ने महसूस कराया है। साथ ही जिन्दगी के अनेक अनुभवों को विविध रूपों में दर्शन कराये हैं।

जन्म तिथि व स्थानः 21 अक्तूबर 1952, (जगराँव, पंजाब)

शिक्षाः एम. ए. अंग्रेजी (दिल्ली विश्वविद्यालय) प्राथमिक/माध्यमिक/ आगे – स्थानः शुरुआती शिक्षा रोहतक एवं मौड़ मण्डी (पंजाब), पांचवीं कक्षा से नवीं कक्षा तक (अंधा मुग़ल, सब्जी मण्डी के सरकारी स्कूल में)। दसवीं से हायर सेकण्डरी तक दिल्ली के प्रेसीडेण्ट इस्टेट स्कूल से)।

बी.ए. ऑनर्स इंग्लिश (डॉ. जॉकिर हुसैन कॉलेज, दिल्ली)। एम. ए. इंग्लिश (दिल्ली विश्वविद्यालय)।

पत्नी इंदु का निधन कैंसर से 1995 में हो गया। पुत्री आर्या एक कलाकार के रूप में मुंबई में टीवी और फिल्मों से जुड़ी है।

कार्यक्षेत्र-वर्तमानः भारत में बैंक ऑफ इण्डिया एवं एअर इण्डिया में कार्य किया। ब्रिटेन में बसने के बाद बीबीसी वर्ल्ड सर्विस रेडियो में समाचार वाचक एवं वर्तमान में लंदन की ओवरग्राउण्ड में कार्यरत।

पुरस्कार/सम्मानः

1. ब्रिटेन की महारानी एलिजाबेथ द्वितीय द्वारा एम.बी.ई. (मेम्बर ऑफ़ ब्रिटिश एम्पायर) की उपाधि 2017,
2. केन्द्रीय हिन्दी संस्थान, आगरा का डॉ. मोटुरी सत्यनारायण सम्मान 2011
3. यू.पी. हिन्दी संस्थान का प्रवासी भारतीय साहित्य भूषण सम्मान 2013
4. हरियाणा राज्य साहित्य अकादमी सम्मान-2012
5. मध्य प्रदेश सरकार का साहित्य सम्मान
6. ढिबरी टाइट के लिये महाराष्ट्र राज्य साहित्य अकादमी पुरस्कार – 1995. तत्कालीन प्रधानमंत्री श्री अटल बिहारी वाजपेयी के हाथों।
7. भारतीय उच्चायोग, लन्दन द्वारा डॉ. हरिवंशराय बच्चन सम्मान (2008)
8. टाइम्स ऑफ़ इण्डिया समूह एवं आई.सी.आई.सी.आई. बैंक द्वारा एन.आर.आई. ऑफ़ दि ईयर 2018 सम्मान.

इनकी सभी कहानिया उनके जीवन के अनुभब के सामान ही बहुआयामी रूपों में होती हे वो स्वयं कहते है" मेरी कुछ कहानियाँ सच्ची घटनाओ पर आधारित हैं,क्योकि जीवन में प्रेरित भी करता हैं और मजबूर भी;किन्तु उन कहानिओं में भी घटना से कही अधिक महत्वपूर्ण रही हैं उन घटनाओ के पीछे की मारक स्थितिया।' मेरी कहानियो में अंडरकरेंट महसूस किया जा सकता हे 'और यही ही अंडरकरेंट ही साधारण घटा पर आधारित कहानी को विशिस्ट बना देता हे।'इस तरह इनकी कहानी प्यार इन्टलेक्चुल जुगाली'कहानी सवाद और शिल्प पर लिखी कहानी है इसमें प्यार को रूहानी भावना के साथ है इनका मन्ना है की वासना प्राकतिक है और प्रेम इंसान के दवरा बनाई एक भावना है। प्यार क्या एक कोमल भावना भर है या शारीरिक और आत्मिक स्तर पर प्रतिफलित हुए बिना वह अधूरा हैं?यह प्रश्न आज भी प्रासंगिक हैं

इस तरह इनकी कहानिओं क विषय ही इनकी बहुत बड़ी विशेषता हैं और जीवन के हर विषय को इन्होने बहुत ही बारीकी से छुआ हैं,

यहाँ हम तेजेन्द्र शर्मा की कुछ कहानियो के जीवन में आने जाने वाले उन सभी रंगो की तरह ही हे जिस तरह इंद्रधनुष के रंग होते हे इन में दुःख सुख प्यार मिलन बिछोह सभी शामिल हे विदेश की संस्कृति के साथ अपने देश की संस्कृति को साथ लेकर बुनी हे इनकी सभी कहानिओ में अलग अलग विषय और प्रयोग दिखाई देते हे। साथ ही मानवीय संबंधो के खोखलेपन को उजागर करती हुई विदेशो की भी कड़वी सच्चाई को भी बया करती हे

यह कहानी देह की कीमत आज के समय में नोजवानो के जीवन का एक बिलकुल ही कटु सत्य हे विदेश जाकर पेशा कमाने की होड़ में लोग पागल हो गए है और फिर किस तरह की वहां परेशानी होती यह इस कहानी में बखूबी बताया हे ।यह पूरी कहानी एक सिख परिवार की हे तो कहानी के पात्र पंजाबी भाषा भी बोलते ह.

जापान में अवैध तरीकों से नौकरियों के लिए पहुंचे लोगों के साथ कोई हादसा या त्रासदी होने पर, किन मुश्किलों का सामना करना पड़ सकता है इस कहानी का कथानक उन्हीं परिस्थितियों को लेकर बुना गया है। इस कहानी में मानवीय संवेदनाओं की शुरू से लेकर अन्त तक कई बार धज्जियां उड़ती हुई देखी जा सकती है। कहानी के अंत में स्त्री दर्द की पराकाष्ठा पाठक को अति द्रवित करती है। जब पम्मी अपनी सूजी आँखों से अस्थि कलश देखती है और तीन लाख के ड्राफ्ट को उठाकर सोचती है कि यह उसके पति की देह की कीमत है या उसके साथ बिताये पांच महीनों की कीमत।

अब कालासागर कहानी जीवन के बिलकुल एक अलग ही तरह के रंग में विमल महाजन को लेकर बुनी गई हे पूरी कहानी मिस्टर विमल महाजन की पत्नी और बेटे बहु पर ही केंद्रित हे और वो उनके मरने के बाद मिलने वाली रकम बुढ़ापे को कमाई का जरिया मानते है । इस कहानी में तेजेन्द्र शर्मा ने कहनी में लोगो के दिलो की फितरत को उधेड़कर रख दिया हे और साथ ही मिसेस वाडेकर एक बहुत ही सवेदनशील उदाहरण हे जिन्होंने अपना बेटा खोया हे उसका का बहुत ही गम होता हे। यहाँ माँ की ममता और सवेदना के साथ औलाद के लिए एक अलग ही ममतत्व का रंग दिखाई देता है

काला सागर को पढ़ते हुए मुझे घोर यथार्थवाद का अनुभव हुआ जिसमें मृतकों के सगे-सम्बन्धी अपने बहुत करीबी रिश्तेदारों की मृत्यु को भी अपनी कमाई का जरिया बनाने में संकोच नहीं करते हैं। उनको मरने वालों से कोई मतलब नहीं है अपने स्वार्थों को पूर्ण करने की चाहत ने मनुष्य को किस हद तक नीचे गिरा दिया है उनकी इस कहानी में इसकी सच्ची तस्वीर दृष्टव्य है... “मिस्टर महाजन... मैं रमेश का पिता हूं आजकल मैं और मेरी पत्नी तलाक लेकर अलग-अलग रह रहे हैं। आपको याद होगा कि

पिछले क्रैश में मेरी बेटी नीना की मौत हो गई थी। इस समय भी एयरलाइन और क्रू यूनियन ने मुआवजा मुझे ही दिया था।... मैं चाहता हूं कि मेरे बेटे और बहू की मृत्यु का मुआवजा मुझे ही मिले इससे पहले कि मेरी पत्नी इसके लिए अर्जी दे, मैं आपके पास अपने क्लेम की यह अर्जी छोड़े जा रहा हूं ताकि आप इंसाफ कर सकें... मैं तो अब बूढ़ा हो चहा हूं। कमाई का अब और कोई जरिया है नहीं।"

"कैंसर" कहानी एक मनौवैज्ञानिक कहानी है जिसमें नारी मनोविज्ञान उभर कर आया है कि क्या कैंसर के चलते जान बचाने की खातिर अगर एक ब्रेस्ट काट कर निकाल दिया जाए तो क्या औरत अधूरी रह जाती है और उसकी खूबसूरती नष्ट हो जाती है? पर पूनम पति के सामने रो पड़ी थी। पूनम दिल व जान से चाहने वाले पति की यह दुआ थी कि ईश्वर कोई चमत्कार कर दे कि पूनम का कैंसर गायब हो जाता। पर आपरेशन लंबा चलता है। आपरेशन के बाद जब पूनम के पति उसके कटे हुए ब्रेस्ट को देखते हैं तो उनका सिर चकरा जाता है। उन्हें विश्वास दादा और अभिनव संभाल लेते हैं। फिर वे बेहोश पूनम को देखकर उनका दिल दहल जाता है। कैंसर एक ऐसी बीमारी है जिसके बारे में डॉक्टरों को पता है पर क्यों होती है इसका पता उन्हें नहीं है। उनके दोस्त, पहचान वाले सब अस्पताल पहुंचते हैं पूनम को देखने। तरह-तरह की सलाह देते। कोई नाश्ते बनाता तो ताबीज पहनने की बात करता। कोई यह विश्वास दिलाता कि सिर हिलाने वाली देवी के पास जाने से बीमारी से छुटकारा पाने का यकीन दिलाता। लेखक ने लुइजा के लिविंग गॉड और डॉ. पिंटो की छाती पर बार-बार क्रास की बात भी कही है। सब अपने विश्वास को पूनम और उसके पति पर मढ़ना चाहते हैं। बहरहाल, पूनम का खयाल रखने वाला पति उसके और करीब आ जाता है, उसकी हिफाजत करता है। कहानी में और भी कई पक्षों पर प्रकाश डाला गया है, जैसा कि कैंसर पेशेंट का बाल झड़ना, उल्टियां करना, यूटेरस और ओवरीज को निकाल देना आदि। एक ब्रेस्ट के हट जाने पर औरतों की मनोदशा का चित्रण यथार्थ बन पड़ा है। लेखक ने अंत में सवाल खड़ा कर दिया है कि समाज में विश्वास और अंधविश्वास के कैंसर से कैसे मुक्ति मिलेगी भले पूनम के कैंसर का इलाज दवा और विज्ञान से कर दिया जाय।

तेजेन्द्र शर्मा की कहानियों को पढ़ते वक्त पाठक, उनके पात्रों से उनकी वेदना से, मानवीयता से और भी कई तरह के अनुभवों को अपने आप में उतरता महसूस करता है। तथा वह फिर कहानियों को पढ़ते वक्त अपने आपको उनसे जुड़ा महसूस करता है।

इनकी कई कहानियों में पारिवारिक, मानसिक उथलपुथह से अपने जीवन की लड़ाई लड़ती हुई आगे बढ़ती गई हैं। हर कहानी किसी एक अलग तरह के विषय को लेकर ही रची बसी है। और उसमें पात्रों का चुनाव भी कहानी को महत्त्वपूर्ण बनाती है। इसी तरह से जिन्दगी में आने वाले विभिन्न पड़ाव तथा उनसे सीखना तेजेन्द्र की कहानियां पाठक को पढ़ने को मजबूर कर देती है।

स्वदेशी समाज से निकलकर विदेशी समाज में बस जाने के कारण विभिन्न क्षेत्रों में कार्यरत रहने के कारण वहां के परिवेश लेखक का प्रभाव कहानियों में दिखाई देता है।

कहानी में भाषा पात्रानुकूल होती है उसमें बोलचाल की सहजता है। आवश्यकतानुसार हिन्दी, उर्दू, अंग्रेजी के शब्दों का प्रयोग में पिरोये हुए मोतियां जैसे अत्यंत स्वाभाविक लै।इनकी कहानियों में वह अपने काल, समय के अनुसार देश-विदेश में क्या कहां घटित हो रहा है बड़ी सजगता से जाहिर करते हैं।

कहानियों का ताना-बाना स्वाभाविक व कृत्रिम परिस्थितियां चरित्र चित्रण भाव शैली, वर्णन कहानी के आगे बढ़ने की गति के निगले उतार-चढ़ाव सभी पाठक को आत्म भावविभोर कर देते हैं।

तेजेन्द्र जी की एक और कहानी "हथेलियों में कंपन" हरिद्वार की पृष्ठभूमि में लिखी गई है। मानवीय भावों और संवेदनाओं की परतों को इस कहानी में बहुत मार्मिकता के साथ खोला गया है। कहानी का उत्तरार्द्ध और भी अधिक संवेदनशील है जब कहानी का पात्र नरेन अपने तीस वर्षीय बेटे की अस्थियों का विसर्जन करन जाते हैं। उनका भविष्य उनके साथ एक कलश में बंद था... आज उल्टी गंगा बहने वाली है... आज पुत्र अपने पिता की मृत्यु बहीखाते में नहीं भरेगा... आज पिता अपने पुत्र का नाम लिखकर हस्ताक्षर करेगा... ठीक उसी पन्ने के नीचे जहां उसने अपने पिता की मृत्यु का विवरण भरा था। यह कहानी न सिर्फ संवेदनाओं को समेटती है बल्कि हिन्दू धर्म की सांस्कृतिक परम्पराओं का दुरुपयोग, उनका व्यवसायीकरण करने वाले पंडों की गाथा का भी बयानी है

इस कहानी को पढ़ते समय घटनायें एक प्रवाह में चलते हुए सजीव चित्रण को साकार रूप देती चलती है। कहानी का अन्त बहुत हृदयस्पर्शी है जब कथावाचक नरेन मौसा का हाथ अपने हाथ में लेता है... "मैंने नरेन मौसा का हाथ अपने हाथ में ले लिया, उनकी नम आँखों की तरफ देखा। मेरी हथेली उनकी हथेली से कह रही थी- नरेन मौसा बस... आज से आपको आपकी जिम्मेदारी से रिटायर कर रहा हूं... अब परिवार की यह जिम्मेवारी मेरी है... मैं हूं न..." नरेन मौसा की हथेलियों में कम्पन सुना जा सकता था।। एक तरफ यह मृत्यु के शोक के साथ ही दूसरी तरफ कुछ लोगो के जीवन यापन का जरिया के तरफ भी ध्यान कराती हैं। लगता हैं की अब मृत्यु का बाजार भी चलने लगा। मरनेवाले के नाम पर यह बेशर्मी के साथ मोलभाव किया जाता हैं और यहाँ लेखक सोचता है की अस्थि विसर्जन करन आए हैं की सब्जी खरीदने।

विभिन्न जातियों और धर्मों के प्रेमी-प्रेमिका के प्रेम की कथा "एक बार फिर होली" कहानी की नायिका नजमा हिन्दू लड़के से प्यार करती है और उसका विवाह कट्टर पाकिस्तानी सेना के कैप्टन से हो जाता है। अपने प्रेम और भारत की यादों के साथ वह अपना जीवन काट रही है। फिर अचानक शौहर की मौत के बाद ससुराल के कठोर रीति-रिवाजों को छोड़कर भारत लौटने का निर्णय लेती है। अपनी

स्मृतियों के बीच सालों बाद लौटना उसको किसी उत्सव से कम नहीं लगता।

सोशल मीडिया फेसबुक और व्हाट्सएप जैसी सोशलसाइट्स से जुड़ी हुई कहानी "शव यात्रा" आज के समय की कहानी है जिसका पात्र इनकी लत व नशे का शिकार है। इन पर आए हुए पोस्ट लाइक कमेंट उसकी जिंदगी उसे दीवाना बना देते हैं । उसे इस लाइक के कारण जिंदगी बहुत ही हसीं लगनी लगती हैं वह सोसल मिडिया का दीवाना हो जाता हैं और यह आज कल के युवाओ के लिए बेहतर सीख हैं । यहाँ तक की कहानी का पात्र नरेन अपनी मृत्यु की झूठी खबर फेसबुक पर डालकर यह देखना चाहता हैं की कितनी लाइक और कमेंट्स मिलते हैं इस तरह सभी पर इस सोशल तकनीक क लिए एक करारा व्यंग हैं और लोग भी धीरे धीरे इस तकनीक का गलत तरीके से उपयोग करके सवेदनशून्य होते जा रहे हैं।

अपराध बोध का प्रेत कहानी में मृत्यु की ओर अग्रसर, कैंसर से पीड़ित पत्नी सुरभि और नरेन की प्रेम कहानी है। नरेन को पता है कि वह अब दो साल से बिस्तर पर है, अपनी पत्नी सुरभि को नरेन बहुत चाहता है। एक लेखक और ऐसा लेखक जिसकी एक भी रचना प्रकाशित न हो, संपादकों की दृष्टि से उसकी रचनाएं रद्दी ही रद्दी हैं। कितने वर्षों से लिख रहा है नरेन, कहीं किसी भी पत्रिका में एक भी तो रचना छपी नहीं, यह अलग बात है कि वह अपने आपको कवि भी समझता है और कहानीकार भी। फिर भी लिखने की भूख है और उससे अधिक छपने की ललक। इस ललक मेव अब अपना समय परिवार को नहीं दे पाता है। दूसरी ओर सुरभि लै जो अपनी लगभग 300 कहानियां लिख चुकी है। हायर सेकेंडरी में जब पढ़ती थी, तब से लिख रही है मेरे मन में छपने की भूख है ही नहीं, बस लिखती हूं आत्मसंतोष मिल जाता है। मैं तो उन्हें दोबारा साफ सुथरा करके लिखने की भी नहीं सोचती यदि किसी काम से मन को सुकून मिल जाये, तो इससे बड़ी उपलब्धि क्या होगी।

तेजेन्द्र शर्मा जी की इस कहानी में मानव की दुर्बलताओं और मृत्यु के करीब पड़ी पत्नी के प्रति प्रेम तो है। कहानीकार उन दुर्बलताओं से ग्रस्त मानव मन के दो अपराध बोध को प्रेत की संज्ञा देता है, इसमें कोई हैरानी की बात नहीं है। उसे लगता है कि उसने पत्नी की रचनाएं पीछे से पढ़ ली है और उनकी चोरी करके वह उन रचनाओं को अपने नाम से छपवा लेगा। यह भाव ही उसे डराता है। उसे हैरानी है कि उसे पता नहीं चला कि उसकी पत्नी बड़ी लेखिका है। यह कहानी पति पत्नी के सम्बन्ध।,कैंसर जैसी असाध्य बीमारी से पीड़ित मनुष्य की मनोदशा तथा स्वार्थ को हम सभी के सामने लाकर इंसानियत की गहरी वितृष्णा को पैदा करती प्रतीत होती हैं

'सपने मरते नहीं' कहानी में इला की पहली संतान मृतक पैदा होती, उसका प्रभाव इला पर इतना पड़ता है कि वह डिप्रेशन में आ जाती है। उसका पति नीलेश इस बात से बहुत दुखी रहता है। जन्म से पहले ही उसका नाम प्रतीक रखकर बच्चे के कपड़े खिलौने खरीदने की प्रक्रिया ने इला को गुमसुम कर दिया था। काउंसलिंग से भी फायदा न होने पर भी नीलेश अपने डॉक्टर जे.पी. (जनरल प्रेक्टीशनर – डॉक्टर) के पास हे जाता है। लेडी डॉक्टर की सलाह से वह भारत और भारत में अपने हनीमून वाली जगह शिमला जाती है। इला के मन में बैठा डर कि मैं दुबारा माँ नहीं बन सकती, मुझमें खराबी है। यह भावना उसे हमेशा डराती सताती रहती थी। सपने कभी मरते नहीं धैर्य और संयम से काम लेने पर पुनः जीवन गति पकड़ लेता है। यह कहानी मनोवैज्ञानिक है। मन पर पड़ने वाले घातों-प्रतिघातों से मानव से मानव मन किस प्रकार जकड़ जाता है। इहा पुनः शिमला में गर्भधारण कर बच्चे को जन्म देती है।

'खिड़की' कहानी खिड़की के अंदर और खिड़की के बाहर के लोगों में समन्वय, आत्मीयता बनाने की प्रक्रिया है। शर्मा जी अपने जीवन की रिक्तता, खालीपन, सूनेपन का सदैव हृदय में रखकर जीवंत भाव से जीते हैं। उन्हें खिड़की के बाहर खड़े इंक्वायरी करते बार-बार अलग-अलग प्रश्न करते अकेले सूनेपन से भरे लोगों को हंसते आत्मीयता के साथ बात करते हुए अच्छा लगता है। वह उन्हें अपना परिवार मान चुके हैं। उनके लिए खाना बनाकर खिलाना, बातें करना अच्छा लगता है और यही कारण है कि वह अपना 60वां जन्मदिन उन लोगों के साथ बच्चे की तरह मैक्डानल्ड में मनाने के लिए फोन करते हैं।

इनकी शीर्षक कहानी दीवार में रास्ता आजकल के युवाओ के लिए एक बेहतर कहानी हैं।

तेजेन्द्र शर्मा हरस्तर की दीवार को बखूबी जानते हैं कैसे उस दीवार से रास्ता ढूढना वो ढूढ निकालते हैं बस चुनने की समझ होनी चाहिए जिंदगी में कई रास्ते खुले हैं आज युवाओ को हताश नहीं होना हैं जिंदगी को जीने की लिए उचाई पर पहुंचने की दीवार में से सही रास्ता चुनना आना चाहिए और यही जिजीविषा हैं

यह हमेसा ही अपने आस पास की ही घटनाओ के साथ ही कहानी को रचते बुनते है और इसी कारण तेजेंद्र शर्मा की सभी कहानिया पाठको के दिल के करीब हैं । आज भी उनके दिल में देश की मिटटी का प्यार कहानियो के रूप में बखूबी दिखाई देता हैं हैं

कहानियों में पंजाबी पात्रों का आना बिल्कुल स्वाभाविक लगता है क्योंकि लेखक स्वयं पंजाबी हैं और यह स्वाभाविक भी है कि लेखक अपने परिवेश से पात्रों को चुनता है। कहानियों में लेखक के अपने जीवन की पीड़ा भी उभर कर आई है जो स्वाभाविक है। अपनी जिंदगी में तेजेन्द्र शर्मा ने बहुत सी समस्यों के उतार चड़ाव के साथ जिंदगी को जिया हैं तो उनके बहुत से अनुभव इन सभी कहानिओ में में पाठक महसूस करते हैं। इनकी कलम हमेशा ही देस विदेश से नए नए शीर्षको को लेकर कहानियो को हर बार ही एक नए रूप मे पाठको के सामने लाती हैं। और यह सभी कहानिया पाठक पढ़ते हुए अपने आप को एक नए ही मोड़ पर खड़ा पाता हैं।

संदर्भ ग्रंथ

1. तेजेन्द्र शर्मा, नयी जमीन नया आकाश (समग्र कहानियां-2), यश पब्लिकेशंस एंड डिस्ट्रीब्यूटर्स, नई दिल्ली

2. तेजेन्द्र शर्मा, स्मृतियों के घेरे (समग्र कहानियां-1), यश पब्लिकेशंस एंड डिस्ट्रीब्यूटर्स, नई दिल्ली
3. वांगमय हिन्दी त्रैमासिक पत्रिका, तेजेन्द्र शर्मा का रचना संसार, प्रोफेसर प्रदीप श्रीधर, शुभम् पब्लिकेशन, कानपुर-21
4. कथाधर्मी तेजेन्द्र शर्मा, प्रोफेसर प्रदीप श्रीधर, शुभम् पब्लिकेशन, कानपुर-21